Tender Heart High School, Sector-33-B, Chandigarh

कक्षा- दसवीं

विषय- हिन्दी साहित्य शिक्षिका - श्रीमती कल्पना शर्मा

पुस्तक - 'एकांकी संचय'

पाठ - 6 'दीपदान' (एकांकी) लेखक - डॉ० रामकुमार वर्मा

निम्नलिखित अवतरण पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :-

"धाय माँ, देखो न कितनी सुन्दर - सुन्दर नाच रही हैं। गीत गाती हुई तुलजा भवानी के आगे नाच रही हैं। चलो देखो न।"

प्रश्न (क) वक्ता एवं श्रोता कौन-कौन हैं ? परिचय दीजिए।

उत्तर- वक्ता कुँवर उदयसिंह है। वह चित्तौड़ के स्वर्गीय महाराणा साँगा का सबसे छोटा पुत्र है। वह चित्तौड़ का उत्तराधिकारी है और उसकी आयु चौदह वर्ष है। इस समय वह दीपदान उत्सव में जाने तथा वहाँ लड़कियों का नृत्य देखने जाने की ज़िद कर रहा है। श्रोता पन्ना है जो कुँवर उदयसिंह की धाय माँ एवं संरक्षिका है। वह 'खीची' जाति की राजपूतानी महिला है और उसकी आयु करीब तीस वर्ष है। आज बनवीर द्वारा आयोजित दीपदान उत्सव के पीछे षडयन्त्र की भनक (गुप्त चाल का पता) मिल गई है। इसलिए वह कुँवर को लेकर उत्सव में नहीं जाना चाहती है।

प्रश्न (ख) धाय माँ कौन है ? उसका परिचय दीजिए।

उत्तर- धाय माँ पन्ना है। वह चित्तौड़ के महाराणा साँगा के छोटे पुत्र कुँवर उदय सिंह की संरक्षिका है। पन्ना अत्यन्त ममतामयी धाय माँ है। उदयसिंह भी पन्ना के बिना एक पल भी नहीं रह पाते हैं। पन्ना को जब उदयसिंह के जीवन में आने वाले खतरों का पता चलता है तब वह मन ही मन एक योजना बनाकर उदयसिंह को सुरक्षित स्थान पर भेज देती है। उसके चरित्र में स्वामिभक्ति, राष्ट्रीयता की भावना, एक धाय के सभी गुण, चतुराई, बुद्धिमानी

आदि गुण कूट-कूट कर भरे हुए हैं।

प्रश्न (ग) सुन्दर-सुन्दर लड़कियाँ कहाँ नाच रही थीं और क्यों ?

उत्तर - सुन्दर-सुन्दर लड़कियाँ तुलजा भवानी के मंदिर के सामने बनवीर द्वारा बनवाए गए मयूर-पक्ष कुंड में दीपदान करने गई थीं। वहीं कुंड के सामने वे नाच रही थीं और दीपदान का उत्सव मनाते हुए तथा नृत्य करते हुए दीपकों का दान कर रही थीं।

प्रश्न (घ) धाय माँ लड़कियों का नृत्य देखने क्यों नहीं जाना चाहती थीं?

उत्तर - धाय माँ लड़कियों का नृत्य देखने इसलिए नहीं जाना चाहती थीं क्योंकि इस नृत्य का आयोजन बनवीर ने करवाया था। इस आयोजन के पीछे षडयन्त्र यह था कि नगर के लोग नृत्य देखते हुए रास-रंग में डूब जाएँगे और उसे अपने षड्यंत्र को अंजाम देने का पूरा मौका मिल जाएगा। अतः पन्ना उदयसिंह को इस समय महल में अपनी आँखों के सामने रखना चाहती थी क्योंकि वह बनवीर के इरादों को भली-भाँति समझती, बनवीर किसी भी समय उदयसिंह का अहित कर सकता था।

(ii) "दिन में तो तुम चित्तौड़ के सूरज हो, कुँवर ! रात में तुम राजवंश के दीपक हो, महाराणा साँगा के कुल-दीपक।"

प्रश्न (क) किसने, किसे चित्तौड़ का सूरज कहा और क्यों ?

उत्तर - पन्ना धाय ने कुँवर उदयसिंह को चित्तौड़ का सूरज कहा है। उन्होंने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि अब कुँवर उदयसिंह ही चित्तौड़ के भावी राजा होंगे। धाय माँ का मानना है कि जिस प्रकार दिन में सूरज अपने प्रकाश से पूरे संसार को प्रकाशित कर देता है उसी प्रकार कुँवर उदयसिंह जब दिन में चित्तौड़ की भूमि पर खेलते-खाते, घूमते-फिरते हैं, सबसे मिलते-जुलते हैं और दिनों-दिन बढ़ते जा रहे हैं तब चित्तौड़वासियों के हृदय अपने भावी राजा को देखकर उम्मीदों और खुशियों की किरणें फूटती हैं।

प्रश्न (ख) 'रात में तुम राजवंश के दीपक हो' - से वक्ता का क्या आशय है?

उत्तर - प्रस्तुत वाक्य से वक्ता (पन्ना धाय) का आशय यह है कि जिस तरह दीपक रात के अंधकार को दूर कर देता है उसी

तरह चित्तौड़ के राजवंश पर बनवीर रूपी जो अंधकार मँडरा रहा है वह उनके बालिग होने पर राजा बनने के बाद स्वतः ही समाप्त हो जाएगा। यही आज भी राजवंश के सुरक्षित भविष्य को प्रकाशित कर रही हैं। उनके राजा बनने के बाद बनवीर की कोई कूटनीति नहीं चल सकती।

प्रश्न (ग) कुँवर वक्ता की किस बात से रूठ गए? कुँवर ने वक्ता से क्या कहा और वक्ता ने क्या उत्तर दिया?

उत्तर - जब कुँवर ने वक्ता (पन्ना) के मुँह से 'राजवंश के दीपक' शब्द सुना तो वे एकदम बोल पड़े - 'कुल दीपक'। कहीं तुम मुझे दान न कर देना धाय माँ! क्योंकि वे नाचने वाली लड़कियाँ तुलजा भवानी की पूजा में दीपदान करके ही नाच रही थीं।

इसके बाद कुँवर पन्ना से पुनः ज़िद करते हुए कहते हैं कि धाय माँ चलो न तुम उनका दीपदान देख लो। तब पन्ना साफ़ मना करते हुए कहती है कि मैं इस समय कुछ नहीं देखूँगी कुँवर।

पन्ना की इसी बात पर कुँवर रूठ गए और तो जाओ मैं भी नहीं देखूँगा। मैं उदयसिंह भी नहीं बनूँगा और कुल दीपक भी नहीं बनूँगा। कुछ नहीं बनूँगा। इस पर धाय माँ उन्हें समझाती हैं कि रूठने से राजवंश नहीं चलते। जाओ विश्राम करो।

प्रश्न (घ) वक्ता (धाय माँ) ने तलवार के विषय में क्या कहा?

उत्तर - इस समय उदयसिंह पन्ना से रूठ गए हैं। इसलिए पन्ना उनसे बड़े प्यार से विश्राम करने के लिए कहती हैं। साथ ही कहती हैं कि तुम्हारी तलवार अलग रख दूँगी। तुम सारा दिन तलवार के साथ खेलते रहे, थक गए होगे। जब कुँवर तलवार के साथ ही सोने की बात कहते हैं तब वे कुँवर से कहती हैं कि आने वाले दिनों में तुम्हें तलवार के साथ ही सोना पड़ेगा क्योंकि तुम्हें चित्तौड़ की रक्षा करनी है। वे यह भी कहती हैं कि चित्तौड़ में तलवार से कोई नहीं डरता, जैसे लता पर फूल खिलते हैं न वैसे ही यहाँ वीरों के हाथों में तलवार खिलती है। यहाँ वीरों के हाथों में तलवार चमकती है।